श्री महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्र

नमस्ते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।

शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (१)

देवी महालक्ष्मी की स्तुति करते हुए इन्द्र बोले – श्रीपीठपर स्तिथ और देवताओं से पूजित होने वाली हे महामाये! आपको नमस्कार है। हाथ में शंख, चक्र और गदा धारण करने वाली हे महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।

सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (२)

गरुड पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।

सर्वदु:खहरे देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (३)

सब कुछ जानने वाली, सबको वरदान देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दु:खों को दूर करने वाली हे देवि महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।

मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (४)

सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मंत्रपूत भगवति महालक्ष्मी! आपको सदा नमस्कार है।

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (५)

हे देवि! हे आदि-अंत-रहित आदिशक्ति! हे महेश्वरी! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (६)

हे देवि ! स्थूल, सूक्ष्म और महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े से बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी! आपको नमस्कार है।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रम्हस्वरूपिणि।
परमेशि जगत् मात: महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (७)

हे कमल के आसान पर विराजमान परब्रम्हस्वरूपिणी देवि! हे परमेश्वरि! हे जगदंबे! हे महालक्ष्मी! आपको मेरा नमस्कार है।

स्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगत् मातः महालक्ष्मि नमोस्तुते।। (८)

हे देवि! तुम स्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषित हो। सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को उत्पन्न करने वाली हो। हे महालक्ष्मी! आपको मेरा नमस्कार है।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत्भक्तिमान्नर:।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।। (९)

जो मनुष्य भक्तियुक्त होकर इस महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्र का सदा पाठ करता है, वह सारी सिद्धियों और राज्यवैभव को प्राप्त कर सकता है।

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकाले यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वित:।। (१०)

जो मनुष्य प्रतिदिन एक समय पाठ करता है, उसके बड़े-बड़े पापों का नाश हो जाता है। जो दो समय इस स्तोत्र का पाठ करता है वह धन-धान्य से सम्पन्न हो जाता है।

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।। (११)

जो प्रतिदिन तीन काल पाठ करता है, उसके महान शत्रुओं का नाश हो जाता है और उसके ऊपर कल्याणकारिणी वरदायिनी माता महालक्ष्मी सदा ही प्रसन्न रहती हैं।

।। इति श्री महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्रम् ।।